पुस्तक से संबंधित अभ्यास कार्य पेज नंबर 94

4. किस दोहे से निम्नलिखित भाव स्पष्ट होते हैं? लिखिए।

क) हमें अपनी आलोचना से घबराना नहीं चाहिए और ना ही बुरा मानना चाहिए, बल्कि इन कमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

उत्तर- निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाए।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करे सुभाए।।

ख) जब अज्ञानी लोग बढ़-चढ़कर बहुत महत्व पाने लगते हैं, तब ज्ञानी लोग मौन धारण कर लेते हैं क्योंकि उनका स्वर उनके शोर में दबकर रह जाता है।

उत्तर- पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछत कौन।।

ग) सच्ची भक्ति ही मनुष्य का मार्ग है। मुक्ति के लिए साधक को कर्मकांड (माला) की ज़रूरत नहीं, बल्कि सच्ची भक्ति की आवश्यकता है।

उत्तर- माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख्य मांही।
मनुवा तो चहु दिसि फिरै, यह कोई सुमिरन नांही।।
